

विचार बिन्दु

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है, उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। -वाल्मीकि

भारत अपना ग्लोबल जीपीएस सिस्टम बनाने की राह पर

स्माट्फोन मैप से लेकर सटीक हथियारों तक, सैटेलाइट नेविगेशन आज, जिंदगी और युद्ध दोनों का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है। जिस किसी ने अपने स्मार्टफोन मैप का कभी इस्तेमाल किया है या फिर ओला या ऊबर टैक्सी बुक की है तो इसका मतलब है उसने जीपीएस याने सैटेलाइट नेविगेशन सिस्टम का इस्तेमाल किया है। बहुत लोग नहीं जानते कि जीपीएस, यानी ग्लोबल

पोजीशनिंग सिस्टम, अमेरिका का एक विराट नेटवर्क है। अमेरिका के जीपीएस, जिसे ग्लोबल नेविगेशन सिस्टम कहते हैं, जैसे और भी सिस्टम अभी दुनिया में उपलब्ध हैं, मगर इस व्यवस्था में अमेरिका का ही बोल-बाला है। अब भारत भी अपना झुंड का जीपीएस सिस्टम विकसित कर रहा है। यह सिस्टम सैटेलाइटों के समूह के साथ काम करते हैं। इस वक्त चार वैश्विक सैटेलाइट सिस्टम पृथ्वी के चारों ओर घूम रहे हैं। ये हवायें जहाज, नाविक जहाज, सड़क के वाहनों, और यहां तक कि होटल खोज रहे पर्यटकों को तथा शहरों में टैक्सी चालकों को भी रास्ता दिखाते हैं। साथ ही ये युद्ध में भी अहम भूमिका निभाते हैं और एक दूसरे पर सटीक वार करते हैं। सैटेलाइट नेविगेशन वास्तव में समय का खेल है। यह वैश्विक सैटेलाइट सिस्टम बहुत सटीक परमाणु घड़ियां होती हैं। पृथ्वी के चक्कर लगा रहे सैटेलाइट्स हर पल, अपनी बिल्कुल सटीक स्थिति और सिग्नल भेजने के सही समय को ब्रॉडकास्ट करते रहते हैं। धरती पर इस्तेमाल होने वाले जीपीएस जैसे डिवाइस, इन सिग्नलों को पकड़ कर अपनी सही लोकेशन पहचान पाते हैं। वैश्विक सैटेलाइट सिस्टम चार सैटेलाइटों के सिग्नल से अक्षांश, देशांतर और ऊंचाई का डेटा निरंतर लेता रहता है। इस दौरान किसी भी सैटेलाइट के चार से समयांतर को भी वह दुरुस्त करता रहता है। यह तकनीक बहुत तेज और सटीक है। लेकिन इसमें एक कमजोरी भी छिपी है। विशेषज्ञ बताते हैं कि ग्लोबल नेविगेशन सिस्टम सैटेलाइट सिस्टम के सिग्नल काफी नाजुक होते हैं। ये सिग्नल इतने कमजोर होते हैं कि इनके पास अगर रेडियो तरंगों में, चाहे गलती से या जानबूझकर कुछ शोर आ जाये, तो इनके रिसेप्शन में दखल आ सकता है। चुनौती यह है कि इसे समझा जाय और जोखिम कम करने के लिए कदम उठाये जाय और यह सिस्टम हमें सुविधाएं देता रहे।

दुनिया में इस समय चार वैश्विक नेविगेशन शक्तियां हैं वे हैं अमेरिका, रूस, यूरोप और चीन। सबसे पहले 1970 के दशक में दो ग्लोबल नेविगेशन सिस्टम अमेरिका और सोवियत यूनियन ने विकसित किए थे। अमेरिका ने 'जीपीएस' बनाया, जो पूरी दुनिया के क्षेत्र को कवर करने वाला पहला सैटेलाइट नेविगेशन सिस्टम बन गया। आज सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला सिस्टम भी यही है। लगभग उसी समय सोवियत रूस ने अपना 'ग्लोनास' सिस्टम बनाया। उसके बाद 2000 के दशक की शुरुआत में यूरोपीय संघ ने यह सोचकर कि जीपीएस पर निर्भर रहना यूरोप को अमेरिका की रणनीतिक तकनीक पर निर्भर बना देगा, तो उन्होंने अलग से अपना 'गैलिलियो' सिस्टम बनाया शुरू किया। चीन का 'बाइडू' सिस्टम इन चारों में सबसे नया है। यूरोप की तरह, चीन भी अमेरिका के जीपीएस पर अपनी निर्भरता कम करना चाहता था। ये चारों सिस्टम लगभग एक जैसे हैं, और नागरिक और सैन्य दोनों कामों के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। 'जीपीएस', 'ग्लोनास' और 'गैलिलियो' लगभग एक जैसी कक्षाओं पर लगभग 19,000 से 23,000 किलोमीटर की ऊंचाई पर समान संख्या में सैटेलाइट इस्तेमाल करते हैं। 'बाइडू' अपने सिस्टम में ऊंची कक्षाओं वाली सैटेलाइट्स जोड़ता है जिससे उसे एशिया में स्थानीय कवरेज बेहतर मिले। इनमें से हर एक सिस्टम धरती पर किसी भी जगह संकेत भेज सकता है, चाहे वह कलाई की घड़ी जितनी छोटी डिवाइस ही क्यों न हो।

ज्यादातर डिवाइस कई तरह की सैटेलाइट सिस्टम का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन यह डिवाइस पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए किसी की स्मार्टफोन 'जीपीएस' और 'ग्लोनास' दोनों का इस्तेमाल कर सकती है। जापान और भारत के पास भी ऐसे सिस्टम हैं, लेकिन वे पूरी दुनिया के क्षेत्र को कवर नहीं करते हैं। वे सीमित नेविगेशन देते हैं। जापान का नेविगेशन सिस्टम है 'क्यूरेडोएसएस' जो एशिया ओशनिया क्षेत्र में काम करता है, हालांकि इसका मुख्य फोकस जापान पर ही है। भारत का अपना नेविगेशन सिस्टम 'नाविक' है। 'नाविक' यानी नेविगेशन विद इंडियन कॉन्स्टेलेशन। यह एक स्वतंत्र नेविगेशन सिस्टम है जिसे भारतीय अंतरिक्ष शोध संस्थान यानी इसरो ने विकसित किया है। नाविक को 2006 में मंजूरी दी गई थी और इसका बजट था 17.4 करोड़ डॉलर रखा गया था। इसे 2011 में तैयार होना था लेकिन 2018 में जाकर इसने काम करना शुरू किया। 'नाविक' में 8 उपग्रह जुड़े हुए हैं जो 1500 किलोमीटर ऊपर से भारत की पूरी जमीन पर नजर रखते हैं। फिलहाल 'नाविक' का सीमित इस्तेमाल हो रहा है। इसे सार्वजनिक गाड़ियों पर निगाह रखने, गहरे समुद्र की तरफ जाने वाले मछुआरों की सावधान करने और प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति पर नजर रखने तथा जानकारी देने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। ट्रेनों की ट्रैकिंग के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। भारतीय वैज्ञानिक अब इसे स्मार्टफोन में इस्तेमाल के लिए तैयार कर रहे हैं। दूसरे नेविगेशन सिस्टमों और 'नाविक' में मुख्य फर्क इलाके की निगरानी का है। दूसरी जीपीएस सेवाएं दुनिया के सारे देशों में काम करती हैं और उनके उपग्रह दिन भर में धरती का दो बार चक्कर लगाते हैं। इसके उलट 'नाविक' फिलहाल केवल भारत और उसके आसपास के इलाके पर नजर रखता है।

भारत ने 2021 में सैटेलाइट नेविगेशन नीति का जो प्रस्ताव तैयार किया था उसमें कहा गया है कि सरकार नेविगेशन सिस्टम के कवरेज को विस्तार देने पर काम करेगी जिससे कि इसे क्षेत्रीय से वैश्विक बनाया जा सके। इसके पीछे 'नाविक' के सिग्नल को दुनिया भर में मुहैया कराने का लक्ष्य रखा गया है। पिछले साल अनास्त में भारत सरकार ने कहा कि 'नाविक', 'सटीक स्थिति (पोजीशन एक्ज्यूरेसी) बताने के मामले में अमेरिका के जीपीएस सिस्टम जितना ही अच्छा बन जायें।

सरकार का कहना है कि 'नाविक' को विदेशी उपग्रहों और नेविगेशन सर्विस को धोखा देना और एलपीजी की आपूर्ति में अस्थिरता, छोटे उद्योगों का ठप पड़ना, निर्यात पर असर-ये सब संकेत दे रहे हैं कि वैश्विक अस्थिरता का बोझ हम भी हो रहे हैं। दुनिया इतनी छोटी हो चुकी है कि कई लोग इसकी तुलना एक गांव से भी करते हैं। मानना ही होगा कि यह एक ऐसा साझा घर बन चुकी है, जिसकी एक दीवार पर आग लगे तो

सैटेलाइट नेविगेशन वास्तव में समय का खेल है। यह वैश्विक सैटेलाइट सिस्टम बहुत सटीक परमाणु घड़ियां होती हैं। पृथ्वी के चक्कर लगा रहे सैटेलाइट्स हर पल, अपनी बिल्कुल सटीक स्थिति और सिग्नल भेजने के सही समय को ब्रॉडकास्ट करते रहते हैं। धरती पर इस्तेमाल होने वाले जीपीएस जैसे डिवाइस, इन सिग्नलों को पकड़ कर अपनी सही लोकेशन पहचान पाते हैं। वैश्विक सैटेलाइट सिस्टम चार सैटेलाइटों के सिग्नल से अक्षांश, देशांतर और ऊंचाई का डेटा निरंतर लेता रहता है। इस दौरान किसी भी सैटेलाइट के चार से समयांतर को भी वह दुरुस्त करता रहता है। यह तकनीक बहुत तेज और सटीक है। लेकिन इसमें एक कमजोरी भी छिपी है। विशेषज्ञ बताते हैं कि ग्लोबल नेविगेशन सिस्टम के सिग्नल काफी नाजुक होते हैं। ये सिग्नल इतने कमजोर होते हैं कि इनके पास अगर रेडियो तरंगों में, चाहे गलती से या जानबूझकर कुछ शोर आ जाये, तो इनके रिसेप्शन में दखल आ सकता है।

दुनिया भर की सेनाएं भी अब सामग्री प्रबंधन, नक्शे बनाने और सैन्य कार्रवाई की योजना तैयार करने के लिए सैटेलाइट नेविगेशन पर निर्भर हैं। इनकी मदद से क्रूज मिसाइल और तथाकथित 'स्मार्ट' बम जैसे हथियारों को गाइड किया जा सकता है। ड्रोन चलाने के लिए भी इन्हें इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन इसी दोहरे इस्तेमाल के कारण सैटेलाइट खुद एक निशाना बन जाते हैं। यूक्रेन युद्ध के दौरान रूस और यूक्रेन ने सिग्नल 'जैमिंग' जैसी इलेक्ट्रॉनिक युद्ध तकनीक इस्तेमाल की। जैमिंग का मतलब है सिग्नल में दखल डालकर उसे बिगाड़ देना, और 'स्पूफिंग' का मतलब है जमीन पर जीपीएस आधारित सिस्टम को धोखा देना। स्पूफिंग करना जैमिंग से कटित है, लेकिन इससे दुरमन को गुमराह किया जा सकता है। नेविगेशन सिस्टम यह भी दिखा सकता है कि कोई यान 400 नॉट्स की स्पीड से दिल्ली एयरपोर्ट से उड़ रहा है, जबकि असल में वह बाइपेर के बाहर 1000 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से कार चला रहा होता है। इस तरह यह तकनीक किसी क्षेत्र से गुजर रहे जहाजी बड़े को अपनी लोकेशन छिपाने की भी मदद कर सकती है। वर्तमान में अमेरिका ईरान युद्ध में इस तकनीक का उपयोग होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरते जहाजों में अत्यंत बारीक नजर डालने के लिए भी किया गया है, जिससे वह जहाज गलती से किसी और देश के जलक्षेत्र में घुस जाए, और वह देश उसे रोक कर अवैध घुसपैठ के आरोप में उस पर कब्जा कर ले। अमेरिका की रिसिलिएंट नेविगेशन एंड टाइमिंग फाउंडेशन के अध्यक्ष का कहना है कि यह समस्या यूरोप और अमेरिका के लिए रूस और चीन से भी बड़ी है, क्योंकि रूस और चीन के पास ग्लोबल नेविगेशन सिस्टम के साथ ही अपने घरेलू बैंकअप सिस्टम भी हैं। पश्चिम के पास ये नहीं हैं। एक अन्य विशेषज्ञ का मानना है कि सबसे परेशान करने वाली बात यह है कि ऐसी कोई तकनीक मौजूद नहीं है जो ग्लोबल नेविगेशन सिस्टम सैटेलाइट सिस्टम संबंधी दिक्कतों को पूरी तरह हल कर दे।

ग्लोबल नेविगेशन सिस्टम के विकल्प बनाने की भी कोशिशें हुई हैं, लेकिन अभी युद्ध में, सबसे कारगर और तेज उपाय, जैमर से उसे नष्ट कर देना ही है। ऐसे में भारत का अपना नेविगेशन सिस्टम 'नाविक' बनाना और उसे आगे विकसित करना महत्वपूर्ण हो जाता है। भारत ने बड़ी प्रगति की है, लेकिन अभी यह विकास के चरण में है। आनेवाले वर्षों में भारतीय सैटेलाइट सही समय पर लांच हो जाते हैं, तो 'नाविक' जीपीएस का एक मजबूत विकल्प बन सकता है।

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

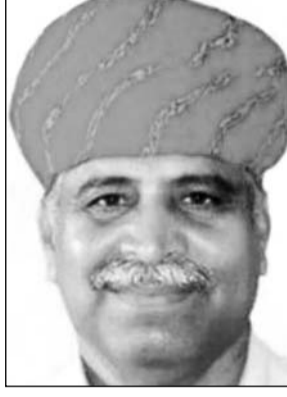
अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा, (वारिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

धन संग्रह गाय के नाम - खर्च के लिए दूसरे काम

गौवंश का 'गौधन से निराश्रित पशु' होना विचार के लिए सामयिक एवं प्रासंगिक विषय बन गया है।



रामपाल जाट

देश के पशुपालन मंत्री राजीव रंजन के अनुसार वर्ष 2023-24 में गायों की संख्या 19.30 करोड़ थी। देश में सरकार द्वारा संचालित एवं पंजीकृत गौशालाओं की संख्या 7,676 है, जिनमें गायों की संख्या लगभग 14 लाख है। विश्व की सबसे बड़ी गौशाला पथमेड़ा है। उसके द्वारा संचालित 15 गौशालाओं में गायों की संख्या लगभग 1,55,000 है। विश्व में सर्वाधिक गायों की संख्या भी भारत में है। वर्तमान में सात व्यक्तियों के लिए एक गाय है जबकि वर्ष 1947 में एक व्यक्ति के लिए औसत चार गाय थी, वर्तमान में सात व्यक्तियों के लिए एक गाय है। महाभारत काल में तो गायों के लिए युद्धों का उल्लेख गौ धन के महत्व को दर्शाता है। जो गाय घर-परिवार एवं खुँटे की शोभा एवं सम्मान थी, वे ही गायें सड़कों पर हैं

तथा निराश्रित पशु के रूप में चिन्हित हो रही हैं। उनसे फसलों की रक्षा के लिए गोपालक किसानों द्वारा ही शासकों से विनती की जाती है। गौवंश का 'गौधन से निराश्रित पशु' होना विचार के लिए सामयिक एवं प्रासंगिक विषय बन गया है।

भारत में दुधारू गायों में गुजरात की गिर, पंजाब एवं उत्तर प्रदेश की साहीवाल, पाकिस्तान के आसपास क्षेत्र से लालसिंघी, राजस्थान एवं गुजरात की शरणपार एवं काकरेज, राजस्थान के शुष्क प्रदेशों की राठी, आंध्र प्रदेश की ओगोल, महाराष्ट्र की देवनी, केरल की वेचुर नस्ल की गायें प्रमुख हैं। भारतीय कृषि में बैल सबसे बड़ा ऊर्जा का स्रोत रहा है। इसी कारण गाय जब भी बछड़ा देती थी तो परिवार में दीपावली जैसा उत्सव अनुभव किया जाता था, बछड़ी देने पर दीपावली जैसी प्रसन्नता परिवार में दिखाई नहीं देती थी। दूसरी ओर भारतीय कृषि में परस्पर पूरकता विद्यमान थी।

खेती से बचने वाला चारा, गौवंश के लिए उपयोग में आता था और गौवंश से बचने वाला गोबर एवं मूत्र खेती का उपाजक बनने के लिए खाद के रूप में काम आता था। इस प्रणाली में परस्परवास्तविकता भी थी। कृषि के मशीनीकरण एवं रासायनिकरण से जो चारा खेती से बचता है, वह बलाया जाता है, उससे वायु प्रदूषित होती है, जो गौवंश से बचता है, वह गोबर एवं मूत्र ट्रेक्टर में उपयोग नहीं हो पाता है। इसे ईंधन यानि गन्ने से समझा जा सकता है। इसके तीन भाग होते हैं, जिसमें निचला जड़ भाग

बीज के रूप में, मध्य भाग तना रस के रूप में एवं ऊपरी भाग पतियों चारे के रूप में उपयोग में आती है। प्रकृति की यह अद्भुत देन भात की वैज्ञानिक कृषि प्रणाली को सहज रूप से समझा देती है।

अन्न से शरीर को शारीरिक एवं मानसिक बल प्राप्त होता है, इसलिए उसे देवस्वरूप माना गया है। अन्न का आशय अमृतान्न है। खेती के रासायनिकरण से यह विषाक्त बन गया। जो शरीर को पीछेका देने के स्थान पर रोग एवं विभिन्न प्रकार की कैसर जैसी असह्य बीमारियां दे रहा है। आयु में वृद्धि के स्थान पर अल्पायु में हृदयाघात की घटनाएं बढ़ रही हैं। सरकार जेनेटिकली मॉडिफाइड नपुंसक बीजों को प्रोत्साहित कर खेती का खर्च बढ़ाकर किसानों को अपनी लीज वलीला समयपूर्व समाप्त करने की ओर धकेल रही है। रासायनिकरण एवं मशीनीकरण से खेती का खर्चा बढ़ रहा है, इससे ट्रेक्टर जैसे कृषि यंत्र, उपकरण, खाद, बीज, एवं कीटनाशी बनाने वाली कंपनियों तो मालामाल हो रही हैं किंतु किसान कैलाह हो रहा है। सरकार अपने उत्पादों का लागत से कई गुना दाम वसूल करती है और किसानों को उनके उत्पादों का अनेकों बार लागत खर्च भी प्राप्त नहीं हो पाता है। किसान विवश और बेचारा बन गया। कृषि में प्रयुक्त होने वाले सामान एवं सामग्री खरीदी जाती है तो सुपान पड़ता है कि 'इस निर्धारित मूल्य पर लेना हो तो लेओ वरना हटो यहाँ से', वहीं किसान अपना उत्पाद लेकर बाजार में बेचने जाता है तो उसे सुनना

पड़ता है 'इस दाम पर देना हो तो दो वरना हटो यहाँ से', यानि किसान बेचेते एवं खरीदते समय बेचारा बना हुआ है, वह स्वयं को असहाय एवं विवश अनुभव करता है। दुष्परिणामतः किसान ऋणचक्र में फँसता जा रहा है। जो एक दाने से हजार दाने तक पैदा करता है, उसे तो ऋण मुक्त होना चाहिए, तब भी कृषि प्रधान भारत में किसान ऋण की पीड़ा भोग रहा है। गौ आधारित खेती में यह स्थिति संभव नहीं है क्योंकि किसान बाजारवाद की चपेट से बचा रहता है। उसका स्वास्थ्य अच्छा रहने से वह निरोगी होता है, चिकित्सा के लिए चक्कर लगाने नहीं पड़ते हैं एवं औषधियों का खर्चा वहन नहीं करना पड़ता है। उर्वरक एवं मशीनों पर होने वाले खर्च की लुट से भी किसानों को मुक्ति मिलती है, अर्थात् श्रेष्ठ समाधान गौ आधारित खेती है। इस हेतु से गौवंश की रक्षा सर्वोपरि है। गौशालाओं की गौवंश की नस्ल बचाने में तो महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके लिए सरकार ने भी सही दिशा में विचार किया और गौशालाओं के संचालन के लिए 2015-16 में 10 उपकर लगाया गया, जिसे गौवंश पर ही खर्च करने का प्रावधान किया। वर्ष 2020-21 के बाद उपकर की मात्रा बढ़कर 30 तक कर दी गयी।

2015-16 से लेकर 31 दिसंबर 2025 तक प्राप्त में से खर्च की गई राशि के संंधन में सूचना के अधिकार के अनुसार 2060 करोड़ रुपए शेष हैं। एक ओर तो निराश्रित गायों के लिए छाया का प्रबंध नहीं होने

से वे सड़कों पर हैं, दूसरी ओर इतनी बड़ी राशि का उपयोग नहीं किया जा रहा है। संभावना यह भी व्यक्त की जा रही है कि गायों के नाम पर उपकर से वसूली जा रही राशि अन्य कार्यों के लिए खर्च की जा रही है। इससे सरकार की गाय के लिए गंभीरता पर प्रश्नवाचक चिन्ह लगता है।

कृषि प्रधान भारत की जनता गौ पूजा एवं सेवा को श्रेष्ठ धर्म मानती है। इसीलिए सामान्यतया घरों में बनने वाली पहली रोटी गाय के लिए ही रखे जाने की जाने की श्रेष्ठ परिंपरा प्रचलन में रही है। इसी दिशा में गौशालाओं के साथ गौपालकों को भी प्रोत्साहन दिया जाए तो श्रेयस्कर सिद्ध हो सकता है। इस हेतु से उपकर की राशि के खर्च पर विचार किया जाना भी सार्थक हो सकता है। यह समीकरण भी विचार के लिए समीचीन है कि 5 लाख का शहर 500 गायों की पालना नहीं कर सकता जबकि 500 घरों का गांव 500 गायों को सरतासा से रख सकता है। गौवंश की वृद्धि एवं रक्षा के लिए बैल आधारित खेती को सर्वोत्तम उपाय के रूप में अपनाया श्रेष्ठ विचार है। जन-जन की आत्मवी भावनाओं का आधार गौवंश देश के अन्नदाताओं को बाजारवाद एवं ऋणचक्र से मुक्ति दिलाने में कारगर हो सकता है। इस दिशा में सरकार द्वारा आरंभ बैल आधारित खेती के प्रोत्साहन के लिए नकद अनुदान जैसी योजनाओं की निरंतरता अपरिहार्य है।

रामपाल जाट, राष्ट्रीय अध्येक्षक किसान महापंचायत।

भारत : अस्थिर दुनिया में आत्मनिर्भरता जरूरी



प्रो. महेश चंद गुप्ता

दुनिया अब अलग-अलग बिखरे देशों का नक्शा मात्र नहीं रही है। यह एक ऐसा तंत्र बन गई है, जिसमें कहीं भी हलचल होती है तो उसकी तरंगें दुनिया के हर कोने तक पहुंचती हैं। हाल में ईरान, अमेरिका और इजराइल के बीच टकराव की स्थिति के बाद पैदा हुए तनाव ने इस सच्चाई को फिर से उजागर कर दिया है। इससे पहले रूस-यूक्रेन युद्ध से भी यह सचकम मिल चुका है कि जंग किसी एक भूभाग तक सीमित नहीं रहती। उसके असर सीमाओं से परे जाते हैं। इस बात को हम लागू होते देख रहे हैं।

भारत इस अमेरिका-इजरायल-ईरान संघर्ष का हिस्सा नहीं है, लेकिन उसका असर हमारे यहां साफ दिखाई दे रहा है। पेट्रोल और एलपीजी की आपूर्ति में अस्थिरता, छोटे उद्योगों का ठप पड़ना, निर्यात पर असर-ये सब संकेत दे रहे हैं कि वैश्विक अस्थिरता का बोझ हम भी हो रहे हैं। दुनिया इतनी छोटी हो चुकी है कि कई लोग इसकी तुलना एक गांव से भी करते हैं। मानना ही होगा कि यह एक ऐसा साझा घर बन चुकी है, जिसकी एक दीवार पर आग लगे तो

दूसरी दीवार पर बैठे लोग भी उसकी आंच महसूस करते हैं। यही वजह है कि ईरान, अमेरिका और इजराइल के बीच बढ़ता तनाव सिर्फ युद्ध क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। उसकी छाया हमारे रसोईघर, बाजार और छोटे-छोटे काम-धंधों तक आ पहुंची है।

भारत की नीति स्थिर रूप से शांति की है, लेकिन वैश्विक व्यवस्था में उसकी भागीदारी इतनी गहरी है कि किसी भी तनाव के असर से बचना संभव नहीं है। शहरों में ठेले पर चाय बेचने वाला हो या मिठाई की दुकान चलाने वाला अलवाइ, हर किसी के काम पर इसका असर साफ दिखाई दे रहा है। गैस सिलेंडर की बुकिंग में देरी अब सिर्फ एक असुविधा नहीं, बल्कि रोजमर्रा की कर्माई पर चोट बनती जा रही है। इसका बड़ा कारण मूलभूत जरूरतों के लिए हमारा अन्य देशों पर निर्भर होना है। बड़ा सवाल यह है कि क्या हम अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए इतने अधिक बाहरी स्रोतों पर निर्भर हो चुके हैं कि कहीं भी हलचल हो और हमारी जमीन हिलने लगे?

यह सच है कि हमारी जरूरतों का बड़ा हिस्सा आज भी आयात किए गए तेल और गैस से पूरा होता है। खाड़ी क्षेत्र में तनावनी बढ़ते ही सपनाई चैन पर दबाव पड़ता है और उसका सीधा असर हमारे घरों तक पहुंचता है। यह निर्भरता केवल आर्थिक नहीं है, बल्कि रणनीतिक कमजोरी भी है। लेकिन बात केवल ऊर्जा तक सीमित नहीं है। भारत का औद्योगिक और कृषि ढांचा भी कई मामलों में वैश्विक आपूर्ति पर टिका हुआ है। खाद्य तेल से लेकर उर्वरकों तक, इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर रक्षा उपकरणों तक कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें हम पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं हैं। यह स्थिति तब और चिंताजनक हो जाती है

जब वैश्विक संकट लंबा खिंचने लगता है।

तीन दशक पहले सद्दाम हुसेन को काबू करने के लिए मित्र देशों द्वारा इराक पर हमलों से डीजल-पेट्रोल के लिए हमारे देश में लगी लंबी कतारें हमें याद हैं। अब हम कमोबेश वैसी ही स्थिति की आशंका देख रहे हैं। बात केवल आयात की नहीं है, निर्यात भी इस संकट से प्रभावित हो रहा है। बीकानेर का भुजिया, महाराष्ट्र के केले, कपड़ा उद्योग और समुद्री उत्पाद आदि सबका अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचना अब पहले जैसा सहज नहीं रहा। जलगांव से रोना रोने से तीन हजार टन केला खाड़ी देशों व यूरोप को निर्यात होता है, लेकिन इस युद्ध ने निर्यात को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। केले से रसकड़ों कंटेनर बंदरगाहों पर फंसे हुए हैं। इसी प्रकार बीकानेर से भुजिया का निर्यात भी प्रभावित हुआ है। समुद्री रास्तों में असुरक्षा और लागत बढ़ने से कई व्यापारियों को नुकसान उठाना पड़ रहा है। केले केवल माल की आवाजाही का संकेत नहीं है, बल्कि इन उद्योगों से जुड़े लाखों लोगों की रोजी-रोटी का भी सवाल है।

भारत की आत्मनिर्भरता की बहस में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का क्षेत्र अक्सर नजर अंदाज हो जाता है, जबकि यह आज की अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत डिजिटल रूप से तेजी से आगे बढ़ा है, लेकिन इस डिजिटल ढांचे की बुनियाद अब भी काफी हद तक विदेशी तकनीक पर टिकी है। मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम, क्लाउड सेवाएं, सर्वर इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र बाहरी कंपनियों के नियंत्रण में हैं। ऐसे में वैश्विक तनाव या प्रतिबंधों की स्थिति में यह निर्भरता गंभीर जोखिम बन

सकती है। इंटरनेट के क्षेत्र में भी हालात अलग नहीं हैं। सोशल मीडिया, सर्च इंजन और डेटा स्टोरेज जैसे प्लेटफॉर्म विदेशी स्वामित्व में हैं, जिससे डेटा सुरक्षा और डिजिटल संप्रभुता पर सवाल उठते हैं। यह केवल आर्थिक नहीं, बल्कि रणनीतिक चुनौती भी है।

इसके साथ ही, भारत में मौलिक आविष्कारों की कमी भी चिंता का विषय है। आईटी सेवाओं में मजबूती के बावजूद, शोध और पेटेंट के मामले में भारत अभी पीछे है। रिसर्च और डवलपमेंट पर कम निवेश इसकी वजह है। ऐसे में आत्मनिर्भरता के लिए तकनीकी नवाचार को प्रारंभिकता देना अनिवार्य हो गया है। यह परिदृश्य हमें बाध्य कर रहा है कि हम आत्मनिर्भरता के उस विचार की ओर लौटें, जिसे हम अक्सर नारे के रूप में इस्तेमाल करते आए हैं, लेकिन उसे व्यवहार में पूरी तरह उतार नहीं पाए हैं। आत्मनिर्भरता का अर्थ दुनिया से कटे जाना नहीं है, बल्कि इतना सक्षम बनना है कि वैश्विक उथल-पुथल का असर सीमित किया जा सके। मौजूदा समय में सवाल यह नहीं है कि भारत को वैश्विक व्यापार से दूरी बनानी चाहिए या नहीं, बल्कि यह है कि क्या हमारी अपनी नींव इतनी मजबूत है कि बाहरी झटकों को सह सके?

समय की मांग है कि हमें ऊर्जा के क्षेत्र में वैकल्पिक स्रोतों की ओर तेजी से बढ़ना चाहिए। सौर और पवन ऊर्जा अब केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं रहे हैं, बल्कि आर्थिक स्थिरता का आधार भी बन चुके हैं। इसी प्रकार मैनुफैक्चरिंग सेक्टर को मजबूत करना, छोटे उद्योगों को तकनीक और वित्तीय सहायता देना और कृषि उत्पादों की प्रोसेसिंग को बढ़ावा देना जरूरी है, क्योंकि ऐसे कदम ही भारत को भीतर

से सशक्त बना सकते हैं।

इस बीच, कुछ ऐसे सवाल भी हैं जिनका उत्तर हमें खोजना चाहिए। बड़ा सवाल है कि क्या हमने सस्ते आयात को कमजोर कर दिया है? क्या हमारी नीतियां दीर्घकालिक सोच के बजाय तात्कालिक लाभ पर अधिक केंद्रित रही हैं? और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या हम हर संकट के बाद कुछ समय के लिए जानते हैं और फिर वहीं पुरानी लापरवाही ओढ़ लेते हैं? दुनिया में अस्थिरता निरंतर बढ़ रही है। कभी इस देश में तो कभी उस देश में कुछ न कुछ संकट खड़ा हो ही जाता है।

मानना पड़ेगा कि दुनिया में अस्थिरता अब अपवाद नहीं रही है बल्कि एक स्थायी स्थिति बनती जा रही है। एक युद्ध खत्म होता नहीं है तो दूसरा शुरू हो जाता है। ऐसे में यह उम्मीद करना कि सब कुछ सामान्य रहेगा, शायद खुद को धोखा देने जैसा ही होगा। हमारे सामने चुनौती यह नहीं है कि वह इन युद्धों को रोक सके बल्कि बुद्धि चुनौती यह है कि हम इनके प्रभाव को अपने यहां किस हद तक सीमित कर पाते हैं। जब दुनिया जलती है तो उसकी आंच से बचना संभव नहीं है लेकिन हम अपने घर को आग से बचाने के प्रयत्न तो कर ही सकते हैं। आत्मनिर्भरता उसी बचाव का नाम है। आत्मनिर्भरता ही एक ऐसा कवच है, जो हमें संकट से बचा सकता है। हमारा देश आत्मनिर्भर बने, इसके लिए कदम उठाने ही होंगे। इसके लिए सरकार, हमारे नीति निर्माताओं, नागरिकों, संस्थाओं को मिलकर काम करना होगा। यह परिहार्य है, इस बात को समझना जाना चाहिए।

प्रो. महेश चंद गुप्ता लेखक प्रख्यात विचारक, चिंतक और वक्ता हैं।

राशिफल बुधवार 8 अप्रैल, 2026



पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, बुधवार, विक्रम सम्वत 2083, मूल नक्षत्र गुरुवार प्रातः 8.48 तक, वारियान योग सायं 5.10 तक वाणिज्य करण सायं 7.02 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति - सूर्य-मीन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मीन, बुध-कुम्भ, गुरु-मिथुन,शुक्र-मेघ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में संचार करेगा। आज यमघट योग सूर्योदय दिन रात होगा। कुमार योग सायं 7.02 तक है। रविविद्योग सम्पूर्ण दिनरात रहेगा। भद्रा सायं 7.02 से आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघडिया - लाभ-अमृत सूर्योदय से 9.22 तक शुभ 10.55 से 12.29 तक, चट 3.36 से 5.10 तक राहुकाल - 12.00 से 1.30 तक सूर्योदय 6.14 सूर्यास्त 6.43

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कारणों से मानसिक तनाव रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृष
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका बन प्राप्त होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।